ओ३म्

वर्षम् - १०, अङ्कः - १२५

कार्तिक-भाद्रपदमासः-२०७५/नवम्बरमासः-२०१८

आर्ष-ज्योतिः

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

३ दिसम्बर सोमवार से १६ दिसम्बर २०१८ रविवार तक श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली का ८५ वाँ वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस तथा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, आप सभी सादर आमन्त्रित हैं...

प्रसारणकार्यालयः

श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम् पौन्धा,
देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ७५७९४६६६५६ चलवाणी - ०९४१११०६१०४

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in Website: www.pranwanand.org

श्रीमद् दयानन्द आर्षज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून के ब्रह्मचारियों का

अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 एवं

उदयपुर-कुम्भलगढ़-चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) शैक्षणिक-भ्रमण

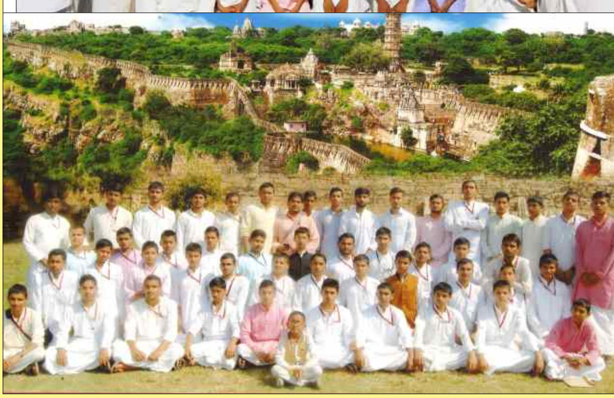

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

कार्तिक-मार्गशीर्षमासः, विक्रमसंवत्-२०७५ / नवम्बरमासः-२०१८, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,११९

वर्षम् - १० :: अङ्कः - १२५ मूल्यम्- रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षकाः❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती

कै. रुद्रसेन आर्यः

प्रो.पीयूषकान्तदीक्षितवर्याः

श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः

प्रो. महावीरः

आचार्ययज्ञवीरवर्याः

श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः

डॉ. रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकाः❖

ब्र. अनुदीपार्यः

ब्र. कैलाशार्यः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्

दूनवाटिका-२, पौन्धा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी-०९४११११०६१०४, ८८१०००५०९६

website: www.pranwanand.org

E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
अथार्य्याभिविनयः	२
सम्पादकीय	३
काशी में छा गयी उदासी (कविता)	६
कन्या-संरक्षण (कहानी)	९
वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ क्यों है?	१२
अवाम और सियासतदां दोनों समझें...	१५
महान् दयानन्द (कविता)	१७
योगदर्शनशिक्षणम्	१८
वैदिक गुरुकुल परिषद् की पत्र आदि...	१९

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ नवम्बर २०१७ :: डाकप्रेषणतिथि-८ नवम्बर २०१७

ओ३म् तत् सत् परब्रह्मणे नमः

अथार्य्याभिविनयः

(१)

ऋषि-गोतमो राहूगणः। **देवता**-विश्वेदेवाः। **छन्द**-निचृद्त्रिष्टुप्। **स्वरः**- धैवतः।

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पति शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥

-ऋग्वेद म० १/सू० ९०/म० ९॥

अन्वयः-

हे मनुष्याः। यथाऽस्मदर्थमुरुक्रमो मित्रो नः शमुरुक्रमो वरुणो नः शमुरुक्रमोऽर्यमा नः शमुरुक्रमो बृहस्पतिरिन्द्रो नः शमुरुक्रमो विष्णुर्नः शं च भवतु तथा युष्मदर्थमपि भवतु॥

आर्याभिविनय-

हे सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप! हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव! हे अद्वितीयानुपमजगदादिकारण! हे अज निराकार सर्वशक्तिमन् न्यायकारिन्! हे जगदीश सर्वजगदुत्पादकाधार! हे सनातन सर्वमङ्गलमय सर्वस्वामिन्! हे करुणाकरास्मत्पितः परमसहायक! हे सर्वानन्दप्रद सकलदुःखविनाशक! हे अविद्यान्धकारनिर्मूलक विद्यार्कप्रकाशक! हे परमैश्वर्यदायक साम्राज्यप्रसारक! हे अधमोद्धारक पतितपावन मान्यप्रद! हे विश्वविनोदक विनयविधिप्रद विश्वासविलासक! हे निरञ्जन नायक शर्मद नरेश निर्विकार! हे सर्वान्तर्यामिन् सदुपदेशक मोक्षप्रद! हे सत्यगुणाकर निर्मल निरीह निरामय निरुपद्रव दीनदयाकर परमसुखदायक! हे दारिद्र्यविनाशक निर्वैरविधायक सुनीतिवर्धक! हे प्रीतिसाधक सत्यविधायक शत्रुविनाशक! हे सर्वबलदायक निर्बलपालक सुधर्मसुप्रापक! हे अर्थसुसाधक सुराज्यवर्द्धक ज्ञानप्रद! हे सन्ततिपालक धर्मशिक्षक रोगविनाशक! हे पुरुषार्थप्रापक दुर्गुणनाशक सिद्धिप्रद! हे सज्जनसुखद दुष्टसुताडन गर्वकुक्रोधकुलोभविदारक! हे परमेशपरेश परमात्मन् परब्रह्मन्! हे जगदानन्दक परमेश्वर व्यापक सूक्ष्माच्छेद्य! हे अजरामजाभयनिबन्धानादे! हे अप्रतिमप्रभाव निर्गुणातुल विश्वाद्य विश्ववन्द्य विद्वद्विलासकेत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य! हे मङ्गलप्रदेश्वर! आप **(शं नो मित्रः)** सर्वथा सबके निश्चित मित्र हो, हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो **(शं वरुणः)** हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर! आप वरुण अर्थात् सबसे परमोत्तम हो, सो आप हमको परमसुखदायक हो। **(शं नो भवत्वर्यमा)** हे पक्षपातरहित धर्मन्यायकारिन्! आप अर्यमा **(यमराज)** हो, इससे हमारे लिये न्याययुक्त सुख देने वाले आप ही हो, **(शं नः इन्द्रः)** हे परमैश्वर्य्यवन् इन्द्र ईश्वर! आप हमको परमैश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिए। **(बृहस्पतिः)** हे महाविद्य वाचोधिपते बृहस्पते परमात्मन् हम लोगों को बृहत्- सबसे बड़े सुख को देने वाले आप ही हो। **(शं नः विष्णुः उरुक्रमः)** हे सर्वव्यापक अनन्तपराक्रमेश्वर विष्णो! आप हमको अनन्त सुख देओ। जो कुछ मांगेंगे, सो आपसे ही हम लोग मांगेंगे। सब सुखों का देने वाला आपके बिना कोई दूसरा नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है, अन्य किसी का नहीं। क्योकि सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीच का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे। आपका स्वभाव ही है कि अङ्गीकृत को कभी नहीं छोड़ते। सो आप सदैव हमकों सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है॥

- **स्वामी दयानन्द सरस्वती**

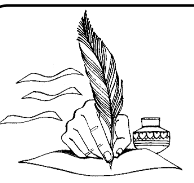

सम्पादक की कलम से...

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट ब्रह्मचर्य एवं अध्ययन-अध्यापन

ब्रह्मचर्य -

ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ हैं - ईश्वरीय चिन्तन, वेदाध्ययन और वीर्यरक्षण। वेद पढ़ने वाले विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य और विद्यार्थी का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। शुक्राचार्य ने कहा है - **'विद्यार्थी ब्रह्मचारी स्यात्'** अर्थात् विद्या पढ़ने वाले को ब्रह्मचर्यपालन करना आवश्यक है। बिना मन और इन्द्रियों पर संयम किए वेद का ज्ञान प्राप्त करना सम्भव नहीं है तथा वेदशास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को समझे बिना ईश्वर-प्राप्ति करना कठिन है। इसलिए **'एकै साधे सब सधे'** इस लोकोक्ति के अनुसार इन्द्रिय-संयम द्वारा वीर्य रक्षा करना ही बाद में ब्रह्मचर्य का अर्थ लोक में प्रचलित हो गया। इसलिए आज ब्रह्मचर्य शब्द से मुख्य रूप से वीर्यरक्षा सम्बन्धि अर्थ का ग्रहण किया जाता है।

हम जो भोजन करते हैं, उसके सार-भाग से रस बनता है। रस का परिपाक होकर, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और सातवीं धातु वीर्य का निर्माण होता है। स्त्रियों में यह धातु रज के रूप में बनती है। यह सब धातुओं का सार है। इसी की रक्षा करना प्रत्येक विद्यार्थी, युवक एवं युवती का कर्तव्य है। सब सुधारों का सुधार ब्रह्मचर्य है। प्रखर बुद्धि, चमकता हुआ मुखमण्डल, उन्नत वक्षःस्थल, सुगठित शरीर, मस्तानी चाल, गम्भीर और प्रभावशाली वाणी, आकर्षक व्यक्तित्व, उत्साह, स्फूर्ति, शौर्य, धैर्य इत्यादि सभी गुणों की खान ब्रह्मचर्य का पालन ही है। ब्रह्मचारी के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। अथर्ववेद में कहा है -

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।'

'ब्रह्मचर्यरूप तप के द्वारा विद्वानों ने मृत्यु को दूर भगा दिया।' भीष्म पितामह की आयु महाभारत के युद्ध में १७५ वर्ष की थी। उन्होंने १० दिन तक अकेले ही सेनापति का पद सँभालते हुए घमासान संग्राम किया। अन्त में १०वें दिन अर्जुन तथा अन्य योद्धाओं के तीरों से आहत होकर शर-शैया पर लेट गए। मृत्यु बार-बार आना चाहती है, परन्तु ब्रह्मचारी भीष्म उसे ठोकर मारते हैं और कहते हैं -'अभी सूर्य दक्षिणायन में है। सूर्य के उत्तरायण में आने पर ही मैं प्राण त्याग करूँगा, इससे पूर्व नहीं।' यह सब ब्रह्मचर्य का ही तो प्रताप था।

महर्षि दयानन्द जी जालन्धर में ब्रह्मचर्य पर व्याख्यान दे रहे थे। उनका व्याख्यान सुनकर रईस विक्रमसिंह ने कहा - 'स्वामी जी! आपने आज ब्रह्मचर्य की बहुत प्रशंसा की, परन्तु आपमें तो वह बल दिखाई नहीं दे रहा? स्वामी जी यह बात सुनकर चुप रहे। जब सरदार विक्रमसिंह जी बग्घी में बैठकर अपने घर को जाने लगे तो स्वामी दयानन्द जी ने चुपके से आकर एक हाथ से बग्घी का पहिया पकड़ लिया। गाड़ीवान ने घोड़ों को चाबुक मारे, परन्तु घोड़े टस से मस नहीं हुए। दोबारा चाबुक लगाए जाने पर घोड़ों ने ज़ोर लगाया। उनके दोनों अगले पैर खड़े हो गए, परन्तु गाड़ी फिर भी नहीं हिली। सरदार विक्रमसिंह ने पीछे मुड़कर देखा - स्वामी दयानन्द जी एक हाथ से गाड़ी का पहिया पकड़े मुस्करा रहे थे। विक्रम सिंह को अपनी भूल का अनुभव हुआ। उन्होंने नीचे उतरकर स्वामी जी के पैर पकड़ लिये और अपनी बात के लिए क्षमा-याचना की।

व्यक्ति के जीवन में धन-सम्पत्ति, विद्या तथा अन्य वस्तुओं की प्राप्ति के अनेक अवसर आते हैं परन्तु युवावस्था एक ही बार आती है। १४ से २५ वर्ष की आयु में यौवन रूप धन आने लगता है। किसी के घर में धन-सम्पत्ति आए तो उसे प्रयत्नपूर्वक संभालकर सुरक्षित रखा जाता है, जिससे चोर-डाकू उसे चुरा न सकें। इसी प्रकार प्रत्येक नवयुवक और युवती को इस अमूल्य यौवन की सुरक्षा करने का यथासम्भव यत्न करना चाहिए। इसकी सुरक्षा करने पर २५ वर्ष में पुरुष और

१८ वर्ष में स्त्री पूर्ण युवा हो जाते हैं।

वीर्य शरीर का राजा है। जैसे गन्ने का रस पीड़ लेने पर खोई शेष बच जाती है और तिलों से तेल निकालने पर केवल खली ही अवशिष्ट रहती है, इसी प्रकार ब्रह्मचर्य-रक्षा के बिना शरीर निस्तेज, निर्बल और हड्डियों का पिंजर बन जाता है। जैसे दीपक में तेल होने पर ही प्रकाश होता है, ऐसे ही सुरक्षित वीर्य की ऊर्ध्वगति होकर वह विचाराग्नि का ईधन बन बुद्धि को प्रकाशित करता है।

ब्रह्मचर्य-पालन के लिए नियम -

१. प्रातःकाल जागरण से लेकर रात्रि तक सारे समय को विभिन्न कार्यों के लिए निश्चित करके उसके अनुसार चलना चाहिए। कभी खाली नहीं बैठें, क्योंकि खाली मन ही शैतान का घर होता है। दिनचर्या नियमित हो।

२.प्रतिदिन व्यायाम के लिए कुछ समय अवश्य निकालिए। व्यायाम से शरीर की शक्ति का पुनः शरीर में अवशोषण होकर वह शरीर को स्फूर्ति, कान्ति, बल, तेज प्रदान करती है। बिना व्यायाम के ब्रह्मचर्य-पालन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

३. भोजन सात्विक होना चाहिए। भोजन में मिर्च, मसाले, तेल, खटाई तथा अभक्ष्य पदार्थों का परित्याग करें। इसी भाँति शराब, भाँग, गांजा, अफ़ीम, हेरोइन इत्यादि मादक वस्तुओं से भी बचना चाहिए।

४. मन को विक्षिप्त करने वाले दृश्य, चलचित्र, नृत्य गीत, उपन्यास, कथा-कहानी को देखना और पढ़ना छोड़ दें।

५. ब्रह्मचर्य-रक्षण में यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का एकान्त दर्शन, सम्भाषण व स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा को प्राप्त होवें।

६. कुसंगति से बचें। यदि कोई चरित्रवान् साथी नहीं मिलता तो अपने माता-पिता के साथ ही रहें। किसी महापुरुष का जीवन-चरित्र अथवा चरित्र को ऊँचे उठाने वाले ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

७. जहाँ तक हो सके, एकान्त में न रहें। अपना प्रत्येक पल सत्कार्य में लगायें और अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति के लिय अहर्निश प्रयत्न करें।

८. सादगी का जीवन व्यतीत करें। फैशन, शृंगार तथा अन्य विलासिता की वस्तुयें ब्रह्मचर्य में बाधक होती हैं। याद रहे - **सादगी सदाचार की जननी तथा शृंगार व्यभिचार का दूत है।**

९. २५ वर्ष से पूर्व विवाह न करें। क्योंकि ब्रह्मचर्य का नाश करने वाला जितना बाल विवाह है, उतना अन्य नहीं।

१०. ईश्वर चिन्तन ही ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ है इसीलिये प्रतिदिन सन्ध्या, जप, स्वाध्याय करना चाहिये।

अध्ययन-अध्यापन विधि-

अध्ययन-अध्यापन एक ऐसी प्रणाली है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है। इससे वह जान पाता है कि वह क्या कर रहा है तथा आगे क्या करेगा? जैसे मनुष्य को वस्त्र धारण करने की आवश्यकता होती है ठीक वैसे ही विद्या रूपी वस्त्रों से सुसज्जित मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती शिक्षा का उद्देश्य भर्तृहरि जी के एक श्लोक का प्रमाण उद्धृत करते हैं-

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः
सत्यव्रता रहितमालमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः॥

जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील स्वभावयुक्त, सत्यभाषणादि नियम पालनयुक्त और अभिमान अपवित्रता से रहित, अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिये आठ वर्ष के हों तभी बालकों को बालकों की और बालिकाओं को बालिकाओं की पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हो उन से शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। (सत्यार्थप्रकाश)

'**विद्यार्थी ब्रह्मचारी स्यात्**' छात्र को ब्रह्मचारी बनना होता है। ब्रह्मचारी के दो ही भोजन हैं, एक विद्या और दूसरा परमात्मा। किन्तु इस भोजन को कभी-कभी खा लेने से मात्र से वह ब्रह्मचारी नहीं बन सकता है। जिस प्रकार विलासी मनुष्य अपने स्वाद के लिए नए से नए व्यञ्जनों को बनाता रहता है, रूप का विलासी नए से नए श्रृंगारों में तल्लीन रहता है, उसी प्रकार विद्याविलासी विद्यार्थी को अपनी विद्या एवं ब्रह्मचर्य में सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। तब ही वह विद्यार्थी ब्रह्मचारी बन सकेगा। विद्यार्थी के लिए शील शिक्षा को पूर्णतया धारण करना आवश्यक है।

पाठशालाओं के सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं - 'पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर ग्राम वा नगर रहे। सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, दरिद्र के सन्तान हों, सब को तपस्वी होना चाहिये। उन के माता पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण करने को जायें तब उनके साथ अध्यापक रहैं, जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।'

अध्ययन-अध्यापन की परम्परा को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीयसमुल्लास में 'अथ पठनपाठनविधिः' नाम से उल्लेख किया है। अध्ययन-अध्यापन की परम्परा को ऋषि परम्परा अर्थात् आर्ष परम्परा का नाम दिया है। ऋषि लोग अपने ग्रन्थों को सबके लिए सुगमता और सरलता के निमित्त लिखते हैं। और पढ़ने वालों को भी सरलता होती है। इसलिए स्वामी जी लिखते हैं कि - 'महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिस के ग्रहण में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।'

आर्ष परम्परा को स्वामी दयानन्द जी ने एक क्रमबद्ध प्रकार से पढ़ने का दिशा-निर्देश दिया है। जिसमें क्रमशः पाणिनिमुनिकृत शिक्षा, अष्टाध्यायी, धातुपाठ, उणादिकोष, अष्टाध्यायी द्वितीयावृत्ति, महाभाष्य पढ़ावें। इस प्रकार से अध्ययन-अध्यापन करने में अधिक समय नहीं लगता।

इन ग्रन्थों के समय के विषय में स्वामी जी कहते हैं कि-'जो बुद्धिमान्, पुरुषार्थी, निष्कपटी, विद्यावृद्धि के चाहने वाले नित्य पढ़े-पढ़ावें तो डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महाभाष्य पढ़ के तीन वर्ष पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौकिक शब्दों का व्याकरण से, पुनः अन्य शास्त्रों को शीघ्र सहज में पढ़ पढ़ा सकते हैं। किन्तु जैसा जितना बोध इनके पढ़ने से तीन वर्षों में होता है उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत, चन्द्रिका, कौमुदी, मनोरमादि के पढ़ने से पचास वर्षों में भी नहीं हो सकता क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्योकर हो सकता है?'

व्याकरण महाभाष्य पढ़ने के उपरान्त यास्कमुनिकृत निघण्टु, पिङ्गलाचार्यकृत छान्दोग्रन्थ, मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, विदुरनीति आदि, पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त आदि, फिर उपनिषदें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्य, ब्राह्मणग्रन्थ अर्थात् ऐतरेय, शतपथ, साम, गोपथ तथा इनके बाद चारों वेदों को पढ़ना चाहिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा पद्धति एवं ब्रह्मचर्य पालन से मनुष्य तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त तक की विद्या को प्राप्त कर सकता है तथा त्रिविधदु:ख अर्थात् आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक दु:खों से दूर होकर इहलौकिक एवं पारलौकिक सुखों का आनन्द भोग सकता है। हम सभी को ऋषि प्रणित ग्रन्थों का अध्ययन कर एवं ब्रह्मचर्य द्वारा अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

- शिवदेव आर्य...
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

काशी में छा गयी उदासी

❑ राजेशार्य...✍

गुरुवर से ले दीक्षा दयानन्द गढ़ पाखण्ड का तोड़ चला,
दीपक बन तम से टकराया था झंझाओं के बीच जला।
गद्गुरु फिर बनेगा भारत वैदिक साँचे में होगा ढ़ला,
सुन काशी में छा गयी उदासी है संन्यासी या कोई बला।

सामने आने से हर घबराता न सहे तर्क युक्ति की मार,
काशी नगरी के पण्डे पण्डित मिलकर करने लगे विचार।
कलेजे हमारे बैठ रहे हैं सुन शास्त्रार्थ की ललकार,
कीच बीच में फँस गई नैया अब क्या होगा हे करतार।

दयानन्द है विद्वान् वेद का निडर सिंह सम डोलता है,
सभी मतों को समान भाव से तर्क तुला पर तोलता है।
विरोध भी हम करें कैसे जब सत्य सत्य सब बोलता है,
पर मूर्तिपूजा का करके खण्डन विष अमृत में घोलता है।

ओ३म् नाम का कवच पहन खण्डन का ले झण्ड़ा कर में,
तर्क-तीरों की वर्षा कर रहा योद्धा डटा शास्त्रार्थ समर में।
प्रमाण-सुदर्शन का कर दर्शन भय जगता है मिथ्या नर में,
बिल्ली को घण्टी बाँधे कौन हम चिन्तित आज इसी डर में।

जा काशी नरेश के पास सभी करने लगे पण्डे वार्तालाप,
है विश्वनाथ की नगरी काशी भक्त करते हैं जिसका जाप।
डूब रही है आज लाज हमारी निशदिन हरते पर सन्ताप,
काशी-नैया के खिवैया राजन्! आज बन जाओ आप।

फँस पण्डों के चक्रव्यूह में नरेश की मति हुई विपरीत,
शीघ्र करो शास्त्रार्थ विप्रवर व्यर्थ हो रहे क्यों भयभीत।
षड्यन्त्र कोई रचेंगे ऐसा निश्चय होगी हमारी जीत,
आप बनो करवाल ढ़ाल मैं मिल करें दयानन्द को पराजित।

हर-हर बम-बम करते हुए मिथ्या विद्या के विद्वान् आए,
कोई पैदल दोड़ लगा रहा कुछ रथों में श्रीमान् आए।
चेले चेली चॅवर डुला रहे हो गजासीन भगवान् आए,
मजा चखा देंगे दयानन्द को यह करते हुए ऐलान आए।

आनन्द बाग में पहुँचे पण्डित जहाँ ऋषिराज विराज रहे,
मध्यस्थ आसन ग्रहण कर हो आनन्दित काशीराज रहे।

मूर्ति पूजा रही आदिकाल से क्यों खण्डन कर महाराज रहे,
ऋषि बोले - दो प्रमाण वेद का जो सबके ही सरताज रहे।
मौन साध गए ताराचरण जी काटो तो कहीं खून न पाओ,
विशुद्धानन्द जी आगे बढ़कर बोले अब हमसे टकराओ।
शरीरिक सूत्र का है नहीं क्या लिख वेद में मूल बतलाओ,
ऋषि बोले मुख्य विषय छोड़ मत विषयानन्तर में पग बढ़ाओ।
उठ अवसर का लाभ तभी विशुद्धानन्द ने किया प्रहार,
कण्ठस्थ नहीं थे वेद यदि तो क्यों शास्त्रार्थ का किया विचार।
क्या आपको हैं कण्ठस्थ सभी तत्काल उठे ऋषि ललकार,
गर्वित हो विशुद्धानन्द बोले - शास्त्र पढ़े मैंने अनेकों बार।
कहा ऋषि ने लक्षण धर्म के हे विप्रवर! बतला दो आप,
कुछ भी नहीं सूझता था उनको बैठ गए होकर चुपचाप।
'धृतिक्षमा...' सुन ऋषि से बालशास्त्री बढ़े ले कर में चाप,
लक्षण अधर्म का पूछा उससे मानो सूँघ गया था साँप।
पराजय सामने खड़ी देखकर पण्डित सोचने लगे उपाय,
माधवाचार्य व वामनाचार्य बालशास्त्री और शिवसहाय,
ताराचरण व विशुद्धानन्द से सब चिन्तित बैठे हो असहाय,
बोले प्रतिमा शब्द वेद में मूर्तिपूजा रहा स्वयं बताय।
बोले ऋषि प्रतिमा से नहीं सिद्ध होती पूजा पाषाणों की,
माधवाचार्य पुन: बोले क्या नहीं है चर्चा वेद में पुराणों की?
ऋषि बोले ब्राह्मण ग्रन्थ हैं ये लो आओ शरण प्रमाणों की,
भागवतादि नहीं रचे व्यास ने ये है गाथा यवन कुषाणों की।
पुराण इतिहास का भी विशेषण है 'इतिहास पुराण:...' बतलाता,
वामनाचार्य ने कहा-वेद में यह पाठ नहीं कहीं पर पाता।
मिले तो हार हार का पहनो नहीं तो मेरी हार है ऋषि सुनाता,
ताला लग गया मुँह पर सबके सभा में छा गया सन्नाटा।
पूछा ऋषि ने व्याकरण में कल्म संज्ञा कहाँ स्वीकार हुई?
बालशास्त्री बढ़े आगे पर पुन: काशी की हार हुई।
थर-थर काँप रहे थे पण्डित यह हालत क्यों करतार हुई,
विद्वानों की होकर नगरी क्यों काशी आज लाचार हुई।
शास्त्रार्थ समर के योद्धा की पाखण्ड-गढ़ पर तोप चली,
कौन सामना करेगा इसका हारे एक से एक बली।
कैसा शरारती घुसा उपवन में है तोड़ रहा कोमल कली,
झुँझलाकर यूँ काशी नरेश ने सिर खुजलाया आँख मली।

दो पत्रे निकाल माधवाचार्य बोले ऋषि की ओर बढ़ाकर,
लिखा है यज्ञ के बाद सुने यजमान पुराण देखो उठाकर।
पत्रे लेकर लगे पढ़ने ऋषि उठे पण्डित कोलाहल मचाकर,
बोले-दयानन्द हारा काशी में जाएगा कैसे प्राण बचाकर।
ताली पीटकर बोले नरेश भी उन्नत रहा काशी का भाल,
शास्त्रार्थ शस्त्र समर बना ऋषि घिरे ज्यों अर्जुन का लाल।
कोई कंकड़ कीचड़ लगा मारने कोई खुश होता था मिट्टी डाल,
सजग सिपाही रघुनाथ ने ऋषि को सुरक्षित लिया निकाल।
पर दुनिया जानती है काशी में ऋषिवर अनेकों बार गए,
दूसरी बार तो काशी नरेश भी करने स्वयं सत्कार गए।
छठी बार में मिलकर पण्डित बता विष्णु अवतार गए,
'राजेश' देश के मिटा क्लेश ऋषि भवसिन्धु पार गए।

- आट्टा, पानीपत

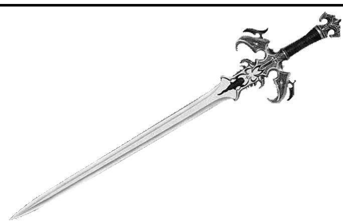

तलवार

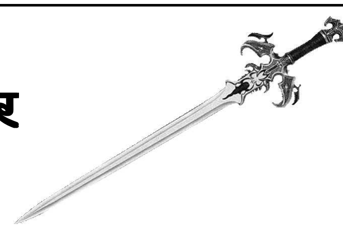

प्राचीन काल से ही युद्ध में प्रचलित एक परम्परागत महत्त्वपूर्ण शस्त्र के रूप में तलवार की पहचान रही है। तलवार से साधारणतः अभिप्राय उस शस्त्र से है जिसका फल लम्बा, धारदार व धातु का हो और उसे पकड़ने के लिए एक हत्था (मूठ) हो।

तलवार को पूर्ण विकास हमें गुप्तकाल में दिखाई पड़ता है। समुद्रगुप्त के परशु प्रकार के सिक्कों में तलवार का अंकन स्पष्ट रूप से मिलता है। 16 वीं शताब्दी के पश्चात् निर्मित भारतीय तलवारों में ईरानी प्रभाव दिखाई पड़ता है। भारतीय तलवार के दो प्रमुख अंग कब्जा (मूठ) एवं फल होते हैं। तलवारों को सुरक्षित रखने के लिए म्यान बनाई जाती है।

राजस्थान में तलवारों को इनकी आकृति, स्थान, निर्माण सामग्री, अलंकरण व निर्माणकर्ता के कारण अनेकों नाम से जाना जाता था जैसे - फौलादी, सकेला, कामडा, सूदेट, खांडा, नागफणा, दुधारी, ईरानी, आरादम, आरापुश्त, जुल्फीकार, देशी, जफरतकिया, किर्च, ऊना, मोती, पूडा, दाव, तैगा, कत्ती, नागन, पट्टा, शतुरमुर्ग कण्ठी, सोसनपत्ता, वलन्हेजी, सुल्तानशाही, ताजूशाही, अलेमानी, पव्वाशाही आदि।

तलवारों की विभिन्न प्रकार के मूठें यथा दनदानफील, सीरमाही, छीकेंदार, पर्चपनाहदार, शाहजहानी, आलमगीरी, दिल्लीशाही, औरंगजेबी, जोधपुरी/करणशाही, सिरोही, ईरानी, अरबी, गजमुखी, सिंहमुखी, मेषमुखी, हाकिमखानी आदि प्रचलित थी।

- निशान्त आर्य (संकलयिता)

कन्या-संरक्षण (कहानी)

❑ ब्र. सूर्यप्रताप आर्य...✍

उत्तर की ओर सुरक्षा करता हिमालय व दक्षिण की ओर से रक्षा करता गहरे सागर के मध्य स्थित भारत के प्रान्त उत्तर प्रदेश में एक जिला था उसका नाम बुलन्दशहर था। इस जिले के गाँव शास्त्री नगर में एक गरीब जुलाहे का परिवार निवास करता था। जुलाहे का नाम रमेश था, उसके पिता का नाम रामचरण व माँ का नाम शान्तिदेवी था। रमेश की एक दुकान थी, वह रोज उसमें धागे बनाता था और दिनभर की मेहनत के बाद वह सिर्फ पाँच सौ रुपये ही कमा पाता था जिससे वह अपने परिवार का भारण-पोषण करता था। रामचरण व शान्तिदेवी एक रूढ़ीवादी परम्परा के पोषक थे। अत: उन्होंने रमेश का विवाह १६ वर्ष की उम्र में ही करा दिया था। उसकी पत्नी का नाम रमा था। एक दिन रमेश अपनी दुकान पर गया हुआ था उस दिन अचानक रमा के पेट में प्रसव पीड़ा हो उठी तो रामचरण गाँव से बाहर जाकर रमेश को बुलाकर ले आता है। रमेश रमा को तुरन्त सरकारी चिकित्सालय में ले जाता है। तो शान्ति रमेश को एकान्त में ले जाती है और कहती है कि बेटा पहले रमा का चेक अप तो करा लो। कहीं बेटी पैदा हो गयी तो घर में अपशकुन हो जायेगा। यह सुनकर रमेश कहता है कि माँ हमें ऐसा नहीं करना चाहिए यह सरकारी अस्पताल है। यहाँ पर सिर्फ ये शब्द कहने मात्र से जेल हो जाती है। वैसे भी अगर लड़की पैदा हो भी गयी तो क्या अपशकुन होगा। वह भी तो हमें खुशियाँ ही देगी। शान्ति यह सुनकर रमेश पर चेक अप कराने का दबाव डालती है। तो रमेश दबाव में आकर चेक अप करने को कह देता है तो पता चलता है कि रमा के पेट में जो भ्रूण है वह एक लड़की है। रमेश माँ के कहे अनुसार नर्स को लड़की को पेट में ही मारने को कहता है। नर्स जैसे ही ऑपरेशन करने लगती है तभी वहाँ पर पुलिस आ जाती है और उन्हें नर्स सहित उन्हें पकड़ कर ले जाती है। रमेश रमा व शान्ति को एक साल की सजा हो जाती है। अब घर में अकेला बूढ़ा रामचरण रह गया था। वह घर की सारी रखी हुई पूँजी लेकर जाता है और वह पूँजी पुलिस को देकर उन्हें छुड़ाकर ले आता है। रमा के एक बेटी पैदा हो चुकी थी। उसका नाम पिंकी था। एक साल बाद एक लड़का भी पैदा हो जाता है उसका नाम मुकेश रखा जाता है। एक दिन अचानक रामचरण इस संसार को अलविदा कह देता है। अब घर में रमेश रमा उसकी बूढ़ी माँ व बच्चे ही बचे थे। रमेश दुकान के साथ-साथ एक बीघा जमीन में खेती भी किया करता था। सभी मुकेश को तो प्यार करते थे लेकिन पिंकी से कोई भी प्यार नहीं करता था। मुकेश नौ साल का तथा पिंकी दस साल की हो जाती है तब रमा मुकेश को एक सरकारी विद्यालय में प्रवेश दिला देती है। मुकेश रोज प्रात:काल स्कूल जाता तथा मध्याह्न में वापस आ जाता, एक दिन रमेश रमा से कहता है कि रमा अब हमें पिंकी को भी किसी विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजना प्रारम्भ कर देना चाहिए। अब वह भी तो समझदार हो चुकी है। परन्तु रमा उसे विद्यालय भेजने से इन्कार कर देती है। और कहती है कि हमें एक बार माँ से पूछ लेना चाहिए। यह बात सुनकर शान्ति कहती है कि रमेश हमारे पास इतना पैसा भी नहीं है कि हम इसे पढ़ा सकें। इसे पढ़ाकर करोगे भी क्या यह हमारा जीवन भर साथ थोड़े ही देगी इसे तो घर का काम-काज ही करना है। रमेश मन मारकर पिंकी को न पढ़ाने के लिए हाँ कर देता है। रमा भी इसी पक्ष में थी कि पिंकी से घर का ही काम कराया जाये ताकि वह घर का कार्य समाप्त करने में रमा की मदद करे। एक दिन मुकेश अपने पिता से कहता है। पिताजी मैं भी अपने देश की रक्षा करना चाहता हूँ, मैं एक

फोजी बनना चाहता हूँ। आप मेरा प्रवेश एक सैनिक विद्यालय में करा दो। रमेश यह बात सुनकर कहता है कि इतने बड़े बनकर क्या करोगे इतने रूपये भी हमारे पास नहीं है, केवल एक बीघा जमीन और यह छोटी-सी दुकान हमारे पास है। मुकेश अपने मन की बात अपनी दादी को बताता है। तो शान्ति रमेश से कहती है कि रमेश तुम गाँव के सेठ लखनपाल से दो लाख रूपये उधार ले लो यह उधार हम बाद में धीरे-धीरे चुका देंगे। रमेश सेठ से दो लाख रूपये उधर ले लेता है तथा मुकेश का प्रवेश एक सैनिक विद्यालय में करा देता है। इधर रमा एक मालकिन की तरह पिंकी को नौकर के समान प्रत्येक दिन चारा काटने घर के झूठे बर्तन माँजने का आदेश दे देती थी। रमेश यह दृश्य देखकर बहुत लज्जित होता था पिंकी प्रत्येक दिन अपने पड़ौसी महेन्द्र की लड़की को स्कूल जाते देखती थी। एक दिन पिंकी अपने पिता के पास जाकर कहती है कि पिताजी मुझे भी महेन्द्र अंकल की लड़की की तरह विद्यालय में पढ़ने भेज दिया करो मैं बड़ी होकर एक प्रोफेसर बनूँगी। अपनी बेटी की यह बात सुनकर रमेश की आँखों में पानी आ जाता है। रमेश सोचता है कि मैं अपनी बेटी को कैसे पढ़ाऊँ। जिस घर में तुम्हारे आने से पहले ही तुम्हे मारने की सलाह तुम्हारी दादी दे चुकी थी उसी ने तुम्हे न पढ़ाने की सलाह दी थी।

रमेश कहता है बेटी तुम कुछ दिन घर में ही रहो थोड़े दिन के बाद मैं तुम्हारा प्रवेश विद्यालय में करा दूँगा। इसी बात में एक वर्ष समाप्त हो जाता है तो मुकेश अवकाश लेकर घर आता है और साथ में नौवीं कक्षा की बहुत-सी पुस्तकें लेकर आता है। पिंकी उन पुस्तकों को पढ़ने लगती है उसकी पढ़ने की उत्कंठा को देखकर रमेश बिना किसी को बताये पिंकी का प्रवेश केन्द्रीय विद्यालय में करा देता है। वह पिंकी को कहता है बेटी तुम अपने भाई की पुस्तकें इसी तरह पढ़ते रहना मैंने तुम्हारा प्रवेश नौवीं कक्षा में करा दिया है। तुम्हें सिर्फ परीक्षा देने स्कूल जाना पड़ेगा। पिंकी यह सुनकर बहुत खुश होती है मुकेश की छुट्टियाँ समाप्त हो जाती है तो उसे फिर से दो लाख रूपयों की जरूरत पड़ती है। इस बार रमेश सेठ से दो लाख रूपये फिर से उधार लेकर मुकेश को देता है तथा उसे विदा कर देता है। मुकेश विद्यालय जाकर एक स्मार्टफोन खरीदता है। और धीरे-धीरे फेसबुक पर बनायें गयें दोस्तों के साथ व्यस्त रहने लगता है, कभी शराब पीता तो कभी वहाँ रहने वाली लड़कियों से छेड़-छाड़ करता तथा स्कूल के अन्य सहपाठियों के साथ दुर्व्यस्न का शिकार हो जाता है। जुआ खेलने तथा शराब आदि पीने में उसके दो लाख रूपयों के खत्म होने का पता भी नहीं लगा। रूपये समाप्त होने पर स्कूल के कार्यालय से रूपये चोरी कर लेता है। इस शिकायत पर उसे सैनिक विद्यालय से निकाल दिया जाता है। इस बार भी मुकेश बहुत सी पुस्तकें लेकर घर आ जाता है। पिंकी भी नौवीं कक्षा में उत्तम श्रेणी से उत्तीर्ण हो जाती है। मुकेश घर आकर अपने माता-पिता व दादी को परेशान करने लगता है। सैनिक स्कूल से आने के बाद गाँव के लोग रमेश को मुकेश की शिकायत करते रहते थे। मुकेश की इन शिकायतों से परेशान होकर रमेश मुकेश की नौकरी एक डेयरी में लगवा देता है। और स्वयं दुकान व कृषि कार्य करके जो धन प्राप्त होता उससे वह पिंकी की पढ़ाई का खर्च तथा सेठ का उधार उतार देता है। पिंकी सांयकाल खेलने के बहाने से अंग्रेजी भाषा का अध्ययन करने जाती थी एक साल बाद दसवीं में भी पास हो जाती है। इधर मुकेश अपना थोड़ा सा भी धन रमेश को नहीं देता था। वह उसे दुर्व्यसनों में बर्बाद कर देता था। वह एक दिन अपने मित्र कालू के साथ एक होटल पर जाता है तथा दारू के नशे में धुत होकर एक लड़की के साथ बलात्कार करके उसे मार देता है। अगले ही दिन पुलिस रमेश के घर आ जाती है। और रमेश को मुकेश की सारी सच्चाई बताकर उसे गिरफ्तार कर के ले जाती है। परन्तु कोई भी उसे बचाने के लिए आगे नहीं बढ़ता है। पुलिस के जाते ही सभी सिर पकड़कर रोने लगते हैं। शान्ति रमेश से कहती है कि अब तो वह वापस भी नहीं

आ सकता क्योंकि उसने काम ही ऐसा किया है। इस दुकान व छोटी-सी जमीन से हमारा गुजारा कैसे होगा? बेटा रमेश तू सही कहता था कि हमें पिंकी को पढ़ा लेना चाहिए था, अब ना तो मुकेश किसी काम का रहा और ना ही पिंकी। और पिंकी तो जवान भी हो चुकी है उसकी शादी भी करनी है। सारी बातों को सुनकर रमेश कहता है कि माँ आपने और रमा ने ही तो पिंकी को पढ़ाने के लिए मना किया था। मैने तो नहीं किया था मैने तो उसे सबसे छुपाकर पढ़ाया तथा उसे दसवीं पास करा दी थी। वह खेलने के बहाने से अंग्रेजी सीखने तथा परीक्षा देने जाती थी। पिंकी को हम ये सोने की चेन गिरवी रखकर पढ़ा सकते हैं। बस फिर क्या था पूरा परिवार पिंकी की पढ़ाई में ध्यान देने लगा। जैसे जैसे समय बीतता गया पिंकी १२ वीं तथा बी. ए. में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई और बी. ए. की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद वह गाँव में बच्चों को ट्युशन पढ़ाने लगी। फिर रमेश ने एम. ए. करने के लिए पिंकी का प्रवेश मेरठ विश्वविद्यालय में कराया। तथा स्वयं दुकान पर बैठकर दिन दूनी रात चौगुनी मेहनत करके पिंकी की एम. ए. की फीस का बन्दोबस्त करने लगा। तथा कुछ ही समय में रमेश ने अपनी मेहनत से उसकी पूरी फीस विश्वविद्यालय में जमा करा दी। फिर वर्ष के अन्त में परीक्षा का परिणाम पूर्णत: उसके पक्ष में ही आया तथा पिंकी ने सम्पूर्ण मेरठ विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसके बाद पिंकी नेट/जे. आर. एफ की तैयारी में पूरी मेहनत के साथ जुट गयी आखिरकार उसकी कड़ी मेहनत रंग लायी और नेट/जे. आर. एफ में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया फिर पी. एच. डी. पूर्ण करके प्रोफेसर बन गई। उसके बाद रमेश ने उसका विवाह आर्ष नामक लड़के के साथ करा दिया। वह ससुराल में रहते हुए वह अपने माता-पिता को धन भेजना प्ररम्भ कर देती है तथा यह बात ससुराल वालों को खटकती है। वे पिंकी को यह करने के लिए मना करने लगते हैं। तो पिंकी को यह बात अच्छी नहीं लगती और वह अपने ससुराल में अपने प्रति होती हुई प्रतिकूलता से परेशान होकर वह अपने ससुराल वालों को छोड़कर अपने घर आ जाती है और अपने माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा बनती है। वह उन्हें मुकेश की कमी महसूस नहीं होने देती है तथा उन्हें वे खुशियाँ देती है। जो उसके घरवालों ने मुकेश से चाहते थे। पिंकी ने वह कर दिखाया जो उस परिवार की नजरों में केवल एक लड़का ही कर सकता है। इसलिए सदा ही -

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
बेटियाँ तो है लम्हा खुशी का'।।

- शास्त्री द्वितीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

तलवार फौलादी

फौलादी (लोहे की एक किस्म) से निर्मित तलवार। फौलाद पर जौहर का काम सुन्दर उभरता है।

तलवार सकेला

सकेला (लोहे की एक किस्म) लोहे से निर्मित तलवार। यह सफेद चमकती हुई होती है।

तलवार कामडा

कामडा (लोहे की एक किस्म) लोहे से निर्मित तलवार। यह भी सकेला की भाँति सफेद होती है, परन्तु वजन में कुछ भारी होती है।

तलवार सुदेट

यह आकार में एकदम सीधी होती है। इसमें किसी प्रकार का घुमाव या खम नहीं होता है। इसका घाट बिल्कुल सीधा होता है। और सुदेह में कोडी से अनी तक खम होता है। **- निशान्त आर्य (संकलयिता)**

वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ क्यों है?

❑ मनमोहन कुमार...✍

संसार में अनेक मत मतान्तर प्रचलित हैं। सभी अपने आप को मत, पन्थ आदि न कह कर ''धर्म'' कहते हैं। क्या यह सभी धर्म हैं? यदि ये सभी धर्म होते तो इनकी सभी मान्यतायें, सिद्धान्त व परम्परायें एक समान होती व सत्य होती। जल का जो धर्म है वह उसका तरल होना, मनुष्य की प्यास बुझाना, हाइड्रोजन तथा आक्सीजन के संयोग से बनना, गर्मी के सम्पर्क में आकर गरम होना व जमने पर ठण्डा होना आदि हैं। जल के यह धर्म संसार में सर्वत्र एक समान हैं तो फिर मनुष्यों के जो धर्म हैं वह भी एक विषय में तो एक समान होने ही चाहियें। अब यदि उनमें अन्तर व विरोधाभास है तो इसका अर्थ है कि सभी मत-पन्थों की सभी मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य नहीं हैं। यदि ऐसा है तो सभी मतों को अपनी-अपनी स्वयं ही समीक्षा करनी चाहिये और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करना चाहिये। परन्तु देखा यह जा रहा है कि कोई मत अपनी असत्य व मनुष्यता के लिये हानिकारक बातों को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं। ऐसे भी मत हैं जो येन केन प्रकारेण उचित व अनुचित तरीकों से अपनी जनसंख्या बढ़ा कर देश की सत्ता को अपने मत के अधीन लाना चाहते हैं। दूसरी ओर हमारे ही देश में हमारे पौराणिक मत को मानने वाले बन्धु अन्य मतों के सभी खतरों से अपरिचित दीखते हैं तथा अपनी प्राचीन धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिये कोई विशेष पुरुषार्थ करते हुए नहीं दीखते।

संसार के सभी मतों पर दृष्टि डालते हैं तो हम यह पाते हैं कि सिख धर्म का लगभग 319 वर्षों का इतिहास है। इसे श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने स्थापित किया था। इस्लाम पर विचार करें तो यह भी 1500 वर्षों से अधिक पुराना नहीं है। ईसाई मत लगभग 2000 वर्ष पुराना है। इससे पहले यह सभी मत संसार में अस्तित्व नहीं रखते थे। तब इनके अनुयायियों के पूर्वज किस मत का पालन करते थे, यह कभी कोई विचार ही नहीं करता। ईसाई मत से भी प्राचीन बौद्ध, जैन तथा स्वामी शंकर का अद्वैत मत है। इनकी अवधि अधिकतम 2500 वर्ष ही निर्धारित होती है। इससे पूर्व पारसी मत था। इनकी धर्म पुस्तक का नाम 'अवेस्ता' है। यह मत बौद्ध, जैन आदि के समकालीन व इससे भी पुराना है। 5000 वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध तक पहुंचे तो ज्ञात होता है कि तब पूरे विश्व में वेद मत वा वैदिक धर्म से इतर कोई धर्म, मत, पन्थ व सम्प्रदाय आदि नहीं था। सभी मत महाभारत काल के बाद उत्पन्न हुए हैं। सृष्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल तक पूरे विश्व में केवल वैदिक मत ही था। वैदिक धर्म व मत कब व कैसे अस्तित्व में आया, इस पर भी विचार करते हैं।

वैदिक मत वेद से अस्तित्व में आया है। वेद चार हैं जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद हैं। यह चार वेद सृष्टि के आरम्भ में, अब से 1.96 अरब वर्ष पूर्व, अस्तित्व में आये। वेदों का ज्ञान इस सृष्टि के रचयिता सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को दिया था। ईश्वर सर्वव्यापक है और इस कारण मनुष्य की जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान है। वह आत्मा में प्रेरणा करके ज्ञान देता है। जिस मनुष्य का आत्मा व मन जितना अधिक स्वच्छ व पवित्र होता है, वह उतना ही अधिक ईश्वर के ज्ञान व प्रेरणा को ग्रहण कर सकता है। आदि चार ऋषियों की आत्मा, मन, बुद्धि, हृदय तथा ज्ञानेन्द्रियां सभी वर्तमान मनुष्यों की तुलना में अधिकतम पवित्र थे, इस लिये उन्हें ही ईश्वर ने वेदों का ज्ञान दिया था। ईश्वर इस संसार का रचयिता है। वह सर्वज्ञ व सर्वव्यापक है अतः उसे सृष्टि का ठीक-ठीक ज्ञान है। यदि उसके ज्ञान

में किंचित भी न्यूनता होती तो वह मनुष्यों को वेदों का सर्वांगपूर्ण सत्य ज्ञान न दे पाता। ईश्वर के साक्षात्कार कर्त्ता एवं वेदों के रहस्य के भी साक्षात्कार कर्ता ऋषि दयानन्द ने वेद एवं संसार की प्रायः सभी पुस्तकों का अध्ययन कर घोषणा की है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' यह बात ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य एवं इतर ग्रन्थों को पढ़ने पर सत्य सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द (1825-1883) ऐसे विद्वान व ऋषि हुए हैं जिन्होंने अपनी मान्यताओं की परीक्षा के लिये सभी मतों के आचार्यों के शंका समाधान व शास्त्रार्थ का स्वागत किया। उन्होंने अपने जीवन में प्रायः सभी मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ व शंका-समाधान सहित वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर वार्तालाप किये और सभी को सन्तुष्ट किया। सभी मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ में उनका पक्ष ही सत्य सिद्ध हुआ।

वेदों का ज्ञान प्राप्त होने पर ऋषियों ने वेदाध्ययन व वेद प्रचार की परम्परा को आरम्भ किया। सृष्टि के आरम्भ में प्रचलित यह परम्परा ही महाभारत काल तक तथा उसके बाद ऋषि दयानन्द तक व अब गुरुकुलों के माध्यम से चल रही हैं। वेद की सभी मान्यतायें संसार के सभी मनुष्यों के लिये हितकारी हैं। इससे किसी मनुष्य के प्रति पक्षपात व अन्याय नहीं होता। सभी शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक व सामाजिक क्षमता के अनुसार अपनी-अपनी उन्नति कर सकते हैं। वेदों में न अन्धविश्वास हैं न कुरीति व मिथ्या परम्परायें। वेदों का ज्ञान पूर्ण तर्क संगत, सत्य एवं प्राणीमात्र के लिये हितकारी है। वेदों के सत्य सिद्धान्तों पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं जिससे वेद सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो जाते हैं और वेदों से प्रचलित मनुष्य के सभी धर्म व कर्तव्य भी सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।

वेदों के अध्ययन से ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित जीवात्मा और सृष्टि का अनादि कारण प्रकृति का ज्ञान भी उपलब्ध होता है। ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति ही संसार के मूल अनादि तत्व व पदार्थ हैं। ईश्वर व जीवात्मा चेतन तत्व हैं तथा प्रकृति सूक्ष्म व जड़ पदार्थ है। विज्ञान जिस परमाणु को मानता है वह प्रकृति से बने हैं। प्रकृति परमाणुओं से भी पूर्व की अवस्था है। इन परमाणुओं की रचना ईश्वर ने ही की है। परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म तथा प्रकृति के भीतर भी व्यापक है। इस कारण वह परमाणु एवं सृष्टि की रचना कर सकता है व उसने की भी है। यह भी कह सकते हैं कि मूल प्रकृति से ही परमाणु व कार्य जगत बना है। संसार में तीन पदार्थों ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के अनादि अस्तित्व को त्रैतवाद का सिद्धान्त कहा जाता है। ईश्वर ने सृष्टि की रचना क्यों की? इसका उत्तर है कि ईश्वर ने अपने ज्ञान व सृष्टि रचना की सामर्थ्य को जीवों के कल्याण के लिये प्रकट किया है। यदि ईश्वर सृष्टि की रचना न करता तो कौन कहता कि ईश्वर सृष्टि रचयिता है व वह सृष्टि की रचना कर सकता है। ईश्वर ने सृष्टि की रचना इस लिये की है कि सृष्टि में विद्यमान, मनुष्य की दृष्टि में, अनन्त जीवों को उनके पूर्व जन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का फल प्राप्त करा सके।

संसार के सर्वाधिक प्रचलित मतों को इस जन्म-मृत्यु व पुनर्जन्म के रहस्य व सिद्धान्त का ज्ञान नहीं है। वेद जीवात्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। पुनर्जन्म का कारण जीवात्मा के शुभ व अशुभ कर्म तथा उनका सुख व दुःख रूपी फल व भोग होता है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त ज्ञान, तर्क व अनेक आधारों पर सत्य सिद्ध होता है। संसार के अनेक मत अज्ञानतावश पुनर्जन्म के सत्य सिद्धान्तों को न जानते हैं और न मानते हैं। पं. लेखराम जी ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में पुनर्जन्म पर एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने पुनर्जन्म विषयक सभी प्रश्नों को सम्मिलित कर उनका तर्कपूर्ण उत्तर दिया है। वैदिक धर्मियों के परिवारों में जब सन्तान जन्म लेती है तो उसका जातकर्म संस्कार होता है। इस संस्कार में ईश्वर के दिये वेदमन्त्र बोले जाते हैं। बच्चों को ओ३म् नाम सुनाया जाता है। उसे यह भी बताया जाता है कि तू वेद अर्थात् ज्ञान व कर्म की शक्ति से युक्त है और तुझे वेद व सांसारिक ज्ञान प्रापत कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, यज्ञ, पुरुषार्थ, परोपकार तथा दान आदि करके एवं अपने मन को संयम में रखकर मोक्ष

को प्राप्त करना है। मोक्ष का सिद्धान्त जैसा वेद व वैदिक साहित्य में है, किसी मत व मतान्तर में नहीं है। इस सिद्धान्त से अन्य मतों की अनभिज्ञता का कारण हमें उनकी अज्ञानता प्रतीत होता है। वैदिक धर्म में मनुष्य की मृत्यु होने पर उसका दाहकर्म व अन्त्येष्टि कर्म किया जाता है। अन्य मतों में प्राय: ऐसा नहीं होता। वहां मृतक शरीर को भूमि में गाड़ने का विधान है। इसका कारण उन्हें जीवात्मा और शरीर का ठीक-ठीक ज्ञान न होना है। आत्मा के शरीर से निकलने के बाद जड़ शरीर बचता है। यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना हुआ होता है। अत: इसे अग्नि में जलाकर पंच-तत्वों में विलीन करना होता है। शरीर में हमें जो सुख दु:ख होता है वह हमारी आत्मा को होता है। आत्मा के निकल जाने पर शरीर को जलाने से उसे किंचित भी कष्ट या दु:ख नहीं होता। अत: सभी को मृत्यु होने पर उसका दाह कर्म ही करना चाहिये जिससे भूमि प्रदुषित होने से बच सके अन्यथा आने वाले समय में कृषि के भूमि शेष नहीं रहेगी।

वैदिक धर्म में गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार करने का विधान है। इन संस्कारों को करने का कारण व उसकी विधि तथा उसमें जिन वेद मन्त्रों का विनियोग वा विधान है, वह अत्युत्तम व श्रेष्ठ है। अन्य मतों में इसका भी अभाव है। वैदिक धर्म की एक विशेषता यह भी है कि यहां नारी को पुरुष से भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मनुस्मृति में लिखा है कि जहां नारियों का सम्मान होता है उस घर व परिवार में देवता अर्थात् श्रेष्ठ मानव निवास करते हैं। अन्य मतों में नारी की ऐसी गौरवपूर्ण स्थिति नहीं है। वैदिक धर्म में सामाजिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ है। यह व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित है। देश व समाज में ज्ञान की पूर्ति करने वालों को ब्राह्मण, देश व समाज की रक्षा व न्याय करने वालों को क्षत्रिय, कृषि व वाणिज्य कार्य करने वालों को वैश्य और जो ज्ञान, शारीरिक बल में न्यून तथा उन्नत कृषि व व्यापार आदि नहीं कर सकते उन्हें अन्य तीन वर्णों की सेवा करने के कारण शूद्र व श्रमिक कहा जाता है। वैदिक काल में यह सब परस्पर सौहार्दपूर्वक रहते थे। हमारे शरीर में ज्ञान का स्थान शिर है, बल व कर्म का स्थान हमारे बाहू हैं, कृषि व वाणिज्य कर्म का प्रतीक हमारा उदर है तथा सेवा के प्रतीक हमारे पैर हैं। शरीर में जिस प्रकार सभी अंग आपस में प्रेम व एक विचार होकर रहते हैं, इसी प्रकार समाज में भी सभी वर्णों को संगठित एवं प्रेम पूर्वक रहना चाहिये। मध्यकाल में इस व्यवस्था मे विकार आने से यह अपनी महत्ता खो बैठी। आज भी विश्व, देश व समाज में ज्ञानी को प्रथम स्थान, बलवान व बुद्धिमान को द्वितीय तथा कृषक व्यापारी को तृतीय स्थान प्राप्त है। यह भी वैदिक वर्णव्यवस्था का एक क्रियात्मक व उत्तम रूप ही है।

वैदिक धर्म में एक पत्नी व एक पति का सिद्धान्त है। इसी को आदर्श गृहस्थी माना जाता है और यह है भी। वैदिक धर्म में तलाक जैसी कुप्रथा भी नहीं है। यहां एक बार विवाह हो गया तो उनका सम्बन्ध मृत्यु होने पर ही छूटता है। अन्य मतों के सम्पर्क में आने पर इसमें भी कुछ बुराईयां आ गई हैं। वैदिक धर्म मनुष्य को सत्य पर आधारित सत्याचरण व शुभ कर्म करने की प्रेरणा देता है। वेदों में यज्ञ का भी विधान है जिससे वायु व जल प्रदुषण दूर होने के साथ मनुष्य आजीवन निरोग वा स्वस्थ रहता है। यज्ञ से दूसरे प्राणियों को भी लाभ होता है जिसका पुण्य यज्ञ करने वाले को होता है और इसका सुखद परिणाम ईश्वर से जीव को प्राप्त होता है। अन्य मतों में ऐसे विधान नहीं है। इन सब श्रेष्ठ विधानों व सिद्धान्तों के होने से वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होता है। हम आह्वान करते हैं कि बुद्धिमान लोगों को वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जन्म व जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिये। सच्चा वैदिक धर्मी इस जन्म में भी सुख पाता है और मरने के बाद भी उसकी उन्नति होकर उसे मोक्ष प्राप्त होता है। आईये, वेदों का अध्ययन करें तथा पृथिवी के श्रेष्ठ वैदिक धर्म को अपनायें। इसी में मनुष्यमात्र का कल्याण है।

- १९६ चुक्खूवाला-२,
देहरादून-२४८००१

अवाम और सियासतदां दोनों समझें अपनी-अपनी भूमिकाएँ

❑ महेश तिवारी...

कहे कबीरा निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय, बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय। आज के परिवेश से यह उक्ति मेल नहीं खाती। फिर वह बात किसी भी स्तर से की जाएं। वह बात सामाजिक जीवन की हो, या राजनीतिक गलियारों की। अब स्थिति ऐसी निर्मित होती जा रहीं, कि जो दल अवाम के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था में पालनहार बनकर पांच वर्ष के लिए बैठता है। वह भी अपनी कमियों को सुनना नहीं चाहता। इतना ही नहीं यह कमी हर दल में आती जा रहीं, फिर वह वर्तमान सरकार हो, या पूर्ववर्ती सरकारें। आज सभी दल का मुख्य उद्देश्य सिर्फ सत्ताधीश बनने की जुगत तक सीमित हो रहा, वह बड़ी विचित्र स्थिति है। सरकार का काम अवाम को बेहतर सुविधाएं मुहैया करना होता है, न कि हर समय राजनीति करना। इतना ही नहीं अवाम भी खुद की जिम्मेवारियों से भागता हुआ नजर आता है। कहते हैं किसी देश की बेहतरी के लिए आवश्यक है, कि रहनुमाई व्यवस्था और वहां की अवाम दोनों अपने-अपने फर्ज और दायित्वों का समुचित निर्वहन करें। पर वर्तमान भागती-दौड़ती जीवनशैली में ऐसा होता प्रतीत नहीं हो रहा।

आज आधुनिक भारत में जब आने वाले भविष्य के कर्णधार बच्चें भूखे सोने को विवश हैं। इतना ही नहीं जीने के लिए आवश्यक भोजन, पानी और हवा है। तीनों चीजें समुचित रूप से समाज के अंतिम पंक्ति में बैठे व्यक्ति को आजादी के सात दशक से अधिक का समय बीतने के बाद भी नहीं मिल पाया है, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य लोकतांत्रिक व्यवस्था का कोई ओर हो नहीं सकता। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में हम लगातार पिछड़ रहें, शायद उसकी फिक्र हमारी व्यवस्था को नहीं, लेकिन अगर कोई बढ़ाई रहनुमाई तन्त्र की आज के दौर में कोई संस्था कर देती है। तो उसका व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार होता है। आखिर दोहरे स्तर की यह राजनीति क्यों? हर समय किए गए रहनुमाई कार्यों का प्रचार ही जरूरी नहीं। पहली प्राथमिकता जन-जन तक खाद्यान्न सुरक्षा के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुँचाने के लिए व्यापक स्तर पर योजनाएं बनानी चाहिए।

यह हुई रहनुमाई अनदेखी की बानगी। अब बात आम-अवाम की। दिल्ली पुनः एकबार ठंड के दस्तक देते ही धूल-धुंध में सनी हुई दिखने लगी है। तो ऐसे में जब हम बेहतर और सुगम जीवन की चाह रखते हैं। तो हम भौतिक सुख-सुविधाओं में इतने तल्लीन क्यों होते जा रहें, कि खुद के विनाश की लीला तो लिख ही रहें। साथ में प्रकृति और पर्यावरण को भी व्यापक क्षति पहुँचा रहे। मान्यताएं है, कि प्रकृति ईश्वर की दी हुई मानव को अनमोल धरोहर है। तो उसे सहेजने की जिम्मेदारी और फर्ज भी हमारा हुआ। पर हम आज इतना सोच कहाँ रहें। स्वविकास की अंधी-दौड़ में हमनें उन सभी पहलुओं से मुँह मोड़ लिया है। जो एक नागरिक होने के नाते हमारे खुद के बावजूद और वन्य-जीव के साथ प्रकृति के संरक्षण के लिए आवश्यक है। जो तत्कालीन दौर की काफी दुःखद स्थिति को बयां करती है। आज के दौर का दुर्भाग्य ही है, कि हम एक राष्ट्र के अवाम होने के नाते सिर्फ अधिकारों के संरक्षक बन कर रह गए है। ऐसे में अगर हम कर्तव्यों और सामाजिक जिम्मेदरियों से दूर भाग रहें। फिर सामाजिक प्राणी कहलाने का औचित्य तो कहीं न कहीं हम खो रहें।

वैसे अब बात पुनः सियासी और सामाजिक परिपाटी के सम्मिलित रूप की करते हैं। जिस दौर में

डिजिटल इंडिया घर-घर के मुहाने पर पहुँचने को हो, उस परिवेश में देश के भीतर से अंधविश्वास नहीं छूट पा रहा हैं। देशवासी अगर वर्तमान में भी सामाजिक कुरीतियों के बन्धन में बन्धे हैं। जो कि देश के समक्ष अज्ञानता, जातिवाद, धर्म , आरक्षण, और गरीबी को नहीं पीछे छोड़ सका हैं, फिर कैसे आजाद हुए हैं हम? क्या मात्र रहनुमाओं की पोथी में, उनके ख्याली विचारों में, चुनाव के रणभूमि में आजाद हुई हैं, देश की अवाम। विश्व का कोई देश हो तब तक देश के लिए आजादी का सोपन अधूरा हैं, जब तक नागरिकों को उनका पूर्ण अधिकार न प्राप्त हो जाएं। फिर ऐसे में हम देशवासी आज गरीबी के दुर्दिन में जकड़े हुए हैं, देश की कुल संपत्ति का 58 फीसद हिस्सा दस बीस हथेलियों तक सिमटकर रह गया हैं। फिर देश में किस स्वत्रंतता, समानता,और आजादी की बात होती हैं, यह समझ से परे हैं।

अगर वास्तव में हमारी रहनुमाई व्यवस्था हमें आजाद पंछी होने का अहसास दिलाना चाहती, तो वह वोट बैंक के नाम पर आज तक हमें और समाज को जातिवादी बेड़ियों में बांधकर नहीं रखती। देश के सियासतदानों की इच्छा अगर देश में समानता, स्वत्रंतता का बीज बोने की होती, तो वह चुनावी दौर में सीटों का बंटवारा जाति-धर्म का समीकरण देखकर नहीं करते, साथ में हमारे रहनुमा हम देश वासियों से अन्य मुद्दों पर भी अलग मालूमात होते हैं। उस ओर भी कदम हमारी सरकारें उठाती। देश में सियासतदां और आम नागरिकों की जीवनशैली में जमीं- आसमां का फर्क हैं। सरकारों को उसको दूर करना चाहिए। अगर सियासतदारों को जनता के समक्ष लाना ही हैं, तो संसद की कैंटीन को त्यागें, मुफ्त यात्रा सुविधाओं को खत्म करें। सुरक्षा तंत्र पर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, उसको तिलांजलि दे, सियासतदां अगर उस पैसे को देश की गरीब, भुखमरी, कुपोषण जैसी समस्याओं पर लगा दें, तो उससे देश मे कुछ सकारात्मक माहौल पैदा हो सकता हैं।

आज देश में अगर धर्म-जाति और संप्रदायवाद की राजनीति हावी हो रही हैं, फिर कैसी आजादी का जिक्र हम कर रहें हैं? उस आजादी को जिसे देश की सामाजिक व्यवस्था तिलांजलि नहीं दे सकी। जातिवादी कुप्रथा को, गरीबीयत को, आरक्षण को, जो वर्तमान में समाज में क्लेश का कारण बन हुआ हैं। देश मे अगर भीमराव अंबेडकर द्वारा प्रदत्त आरक्षण की प्रति दस वर्ष पर समीक्षा नहीं हो रहीं, तो उसके जिम्मेदार भी रहनुमा व्यवस्था हैं, क्योंकि वे वोटबैंक से ऊपर उठने की जहमत नहीं कर सकें हैं। ऐसे में कैसी आजादी की पिपहरी हम बजा रहें हैं। हम वर्तमान डिजिटल इंडिया के दौर में क्यों इतना सहनशील हो गये हैं कि कायरता की सीमा कब लांघ जाते हैं, इसका एहसास भी नहीं कर पाते? समाज में क्रूरतापूर्ण व्यवहार करने वाले को तिलांजलि नहीं दे पाते। अपराधिकरण का सत्ता में लय हो जाता हैं। फिर हम किस परिवेश की ओर झुक रहें हैं, इसका अनुभव क्यों नहीं करते? देश में आखिर स्वच्छ राजनीति की केवल आवश्यकता महसूस की जाती रहेंगी। उसके लिए बाट क्यों नहीं कोई पार्टी जोह पा रहीं हैं। यह हमारे देश की व्यवस्था की कमजोरी हैं, कि शिक्षा को लेकर केवल आगामी लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाती।

क्यों हमारे देश के शिक्षित एवं योग्य युवा विदेश जाने को या अपने प्रदेश को छोड़कर अन्यत्र जाने को मजबूर होते हैं, इसका जवाब हमारी रहनुमाई व्यवस्था क्यों नहीं ढूढ़ती? जो युवा देश के भविष्य के कर्णधार हैं, उनके पलायन करने के कारण पर कब बहस होगी? ऐसा तंत्र क्यों नहीं बन पा रहा हैं, कि देश-प्रदेश की प्रतिभा अपने स्थानीय स्तर के काम आ सके। अब देश की व्यवस्था को जरूर इन विषयों पर गौर करना होगा। इसके साथ देश मे उस व्यवस्था के क्या लाभ जो कुपोषण, और शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार नहीं कर पा रही हैं। यह आजाद देश के समक्ष कलंक हैं, कि देश में पांचवीं और आठवीं के बच्चे

अपने निचली दर्जे की किताब नहीं पढ़ पाते। इससे अच्छा तो देश आजादी के पूर्व था, जब देश में अंग्रेजों ने अंग्रेजियत पैदा करने के लिए शिक्षा में सुधार करने पर आमादा थे। देश में अगर कुपोषण, बेरोजगारी और सामाजिक अभद्रता का बोलबाला बढ़ता जा रहा हैं। फिर सरकारों को विचार करना चाहिए, कि वे देश की अवाम को किस तरीके की आजादी दे रहीं हैं। इसके साथ अवाम को भी अपने कर्तव्यों का भान होना चाहिए, कि वे पर्यावरण प्रदूषण आदि न फैलाएं। अपनी सामाजिक और एक सभ्य राष्ट्र का हिस्सा होने की जिम्मेदारियों को समझें, क्योंकि हर काम सरकार ही करें। यह भी उम्मीद लगाएं बैठे रहना लोकतांत्रिक साए में बेहतर विकल्प नहीं माना जा सकता। निहितार्थ जिसका जो काम नियत है, वह उसे आवश्यक करना होगा। तभी देश बेहतरी के साथ वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ने के साथ एक अमिट और अलग छवि बना पाएगा।

– गोंडा (उत्तरप्रदेश)

महान् दयानन्द

– श्री गजानन्द आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ से

ऋषि दयानन्द मेरे महान्।
तेरे जागरण शंख स्वर से गुँजित भारत का आसमान।
काशी की गलियाँ उठी हिमगिरि की गूँजी गुहा गहन।
कलकत्ता पूना पेशावन उत्तराखण्ड गूँजा दक्खन।
मृतप्राय जाति ने फिर पाया तुमसे नवजीवन नवल प्राण।।
चित्तौड़ उदयपुर जाग उठा सोया सब राजस्थान जगा।
हरियाणे के युग युग योधेयों का जयगान जगा।
चिर सुप्त पंचनद की भूपर लवपुर में गूँजा सामगान।।
पश्चिम में मुम्बापुरी जगी नव प्रकटित आर्यसमाज जगा।
आर्यों की जड़ता दूर भगी सोया भारत का भाग जगा।
उत्तर दक्षिण पूरव पश्चिम में फैली वेद विभा समान।।
तेरे प्रकाश से लेखराम गुरुदत्त लाजपत वीर बने।
बिस्मिल श्रद्धानन्द आदिक ने जीवन बलिदान किये अपने।
पतितों का शुद्धि प्रवर्त्तन से भूले भटकों का किया त्राण।।
हैदराबाद का धर्मयुद्ध जय किया तेरे दीवानों ने।
खुशहालचन्द शारदा वेदव्रत से धुरेन्द्र मस्तानों ने।
नारायण स्वामी ने हो निर्भर फहराया नभ में जय निशान।।
जीवन प्रदीप निर्वाण हुआ पर उससे अगणित दीप जले।
वृन्दावन हरिद्वार मथुरा काशी ज्वालापुर में मचले।
चमूपति का जीवन धन्य धन्य है हँसराज का आत्मदान।।
पाखण्डों के दुर्गम दुर्गों पर निर्भय तुमने कर प्रहार।
सब ध्वस्त किये गुरुडम के गढ़ खोले नवयुग के रुद्ध-द्वार।
अधिकार सभी को वेदों के पढ़ने का तुमने दे समान।।
अज्ञान अविद्या अन्धकार दम्भ के सघन धन ध्वस्त किए।
पाखण्ड खण्डिनी फहराई आसुरी हौंसले पस्त किए।
डूबती भँवर में पार लगा दी राष्ट्र नाव तूने सुजान।।

योगदर्शनशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्यः...✍

अवतरणिका-व्युत्थानचित्ते तु सति तथापि भवन्ती न तथा। कथं तर्हि? दर्शितविषयत्वात् -

पदार्थव्याख्या-व्युत्थानचित्ते=चित्त की व्युत्थानावस्था में **तु**=तो **सति**=होने पर **तथा+अपि**=फिर भी **भवन्ती**=जीवात्मा निजरूप में होता हुआ **न तथा**=स्वयं को वैसा अनुभव नहीं करता। **कथं तर्हि**=तो किस रूप का होता है? **दर्शितविषयत्वात्**=चित्त के द्वारा दिखाए गये विषयों का अनुभवकर्ता होने के कारण -

व्याख्या-उस समय चित्तवृत्तियों के रुक जाने पर अर्थात् असम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था चित्त में विषयों का अभाव हो जाने के कारण से बुद्धि को प्रेरित करने वाला पुरुष अर्थात् आत्मा किस स्वभाव वाला होता है, ऐसा इस सूत्र में बताया जायेगा -

वृत्तिसारूप्यमितरत्र (-योगदर्शन.-१/४)

सन्धि-वृत्तिसारूप्यम्+इति+अत्र=वृतिसारूप्यमितरत्र।

पदार्थव्याख्या-वृत्तिसारूप्यम्=जीवात्मा चित्त की वृत्तियों के समान होता है **इतरत्र**=निरुद्ध अवस्था से भिन्न काल में।

सूत्रार्थ-जब चित्तवृत्ति निरुद्ध नहीं होती, तब इस जीव का ज्ञान चित्तवृत्ति के समान होता है।

व्यासभाष्य-व्युत्थाने याश्चित्तवृत्तयस्तदविशिष्टवृत्तिः पुरुषः। यथा च सूत्रम्='एकमेव दर्शनं ख्यातिरेव दर्शनम्' इति। चित्तमयस्कान्तमणिकल्पं संनिधिमात्रोपकारिदृश्यत्वेन स्वं भवति पुरुषस्य स्वामिनः। तस्माच्चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्यानादिः सम्बन्धो हेतुः।

व्यासभाष्य पदार्थ व्याख्या-व्युत्थाने=व्युत्थान की अवस्था में **याः चित्तवृत्तयः**=जिस प्रकार की चित्तवृत्तियाँ होती हैं **तदविशिष्टवृत्तिः**=उसी प्रकार की वृत्तियों के समान धर्म वाला **पुरुषः**=पुरुष होता है। **तथा**=वैसा ही **च**=और **सूत्रम्**=पंचशिखाचार्य का सूत्र है। **एकम्+एव**=एक ही **दर्शनम्**=रूप वाला पुरुष और बुद्धि होता है। **ख्यातिः**=एक बुद्धिवृत्ति बोध **एव**=ही **दर्शनम्**=दर्शन है **इति**=ऐसा। **चित्तम्**=चित्त **अयस्कान्तमणिकल्पम्**=चुम्बक के समान **सन्निधिमात्रोपकारि**=समीप होने मात्र से पुरुष का उपकारी **दृश्यत्वेन**= वह दृश्यत्व के रूप से **पुरुषस्य स्वामिनः**=पुरुष रूपी स्वामी का **स्वम्**=धन **भवति**=होता है। **तस्मात्**=इसलिये **चित्तवृत्तिबोधे**=चित्तवृत्तियों के बोध होने में **पुरुषस्य**=पुरुष का **अनादिः**=बुद्धि से अनादि **सम्बन्धः**=सम्बन्ध **हेतुः**=करण है।

व्यासभाष्य व्याख्या-व्युत्थान की स्थिति में जिस प्रकार की चित्तवृत्तियाँ होती है पुरुष भी उसी प्रकार प्रतीत होता है। और वैसा सूत्र है - पुरुष और बुद्धि दोनों का दर्शन एक रुप में होता है। यह दर्शन बुद्धिवृत्तियों के रूप में होता है। चित्त अयस्कान्तमणि चुम्बक के सदृश है। सन्निधिमात्र से पुरुष का उपकार करता है। वह दृश्यत्व के रूप में स्वामी जीवात्मा का स्वधन बन जाता है। इसलिए पुरुष को चित्त वृत्तियों का जो ज्ञान होता है, उसमें पुरुष और बुद्धि का प्रवाह से अनादि सम्बन्ध ही कारण है।

महर्षिदयानन्देनोक्त -

१. यदोपासको योग्युपासनां विहाय सांसारिकव्यवहारे प्रवर्त्तते तदा सांसारिकजनवत्तस्यापि प्रवृत्तिर्भवत्याहोस्विद् विलक्षणेत्यत्राह-इतरत्र सांसारिकव्यवहारे प्रवृत्तेऽप्युपा-सकस्य योगिनः शान्ता धर्मारूढ़ा विद्याविज्ञानप्रकाशा सत्यतत्त्वनिष्ठाऽतीव तीव्रा साधारणमनुष्यविलक्षणाऽपूर्वैव वृत्तिर्भवतीति। नैवेदृश्यनुपासकानामयोगिनां कदाचिद् वृत्तिर्जायत इति।

अर्थात् उपासक योगी और संसारी मनुष्य जब व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं तब योगी की वृत्ति तो सदा हर्ष शोक रहित आनन्द में प्रकाशित होकर उत्साह और आनन्दयुक्त रहती है और संसार के मनुष्य की वृत्ति सदा हर्ष शोक रूप दुःख संसार में डूबी रहती है। उपासक योगी की तो ज्ञानरूप प्रकाश में सदा बढ़ती रहती है और संसारी मनुष्य की वृत्ति सदा अन्धकार में फंसती जाती है।-**ऋ.भू.उपासनाविषय**

शेष अग्रिम अंक में......

।। ओ३म्।।

विद्ययाऽमृतमश्नुते -यजु. ४०.१४

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय - ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९

मो.-+91-9868855155, अणुसङ्केत - gurukulparishad@gmail.com

संरक्षक

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

ठा. विक्रम सिंह

कै. रुद्रसेन आर्य

परामर्शक

स्वामी आर्यवेश

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल

डॉ. सोमदेव शास्त्री

अध्यक्ष

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

(मो. 9868855155)

उपाध्यक्ष

स्वामी धर्मेश्वरानन्द

डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

मन्त्री

डॉ. आनन्द कुमार (IPS)

(मो. 9810764795)

सहमन्त्री

आचार्या डॉ. सुमेधा

(मो. 9719013756)

डॉ. धनञ्जय आचार्य

(मो.-9411106104)

कोषाध्यक्ष

आचार्य डॉ. जयेन्द्र

(मो. 9899349304)

सदस्य-कार्यकारिणी

आचार्या एवं आचार्य

सम्बद्ध समस्त गुरुकुल

पत्रांक : प./10/1 **दिनांक:** 13/10/2018

सेवा में,

समादरणीया आचार्या/आचार्य जी

सादर नमस्ते जी।

परमात्मा की कृपा से आप सानन्द होंगे। हैदराबाद में आयोजित आर्यप्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश-तेलंगाना के समस्त अधिकारी व कार्यकर्त्ताओं एवं माननीय प्रो. विट्ठल राव आर्य जी के विशेष सहयोग से श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम राष्ट्रिय अधिवेशन आप सभी की गरीमामयी उपस्थिति में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की सफलता के लिए मैं आपका हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

हैदराबाद अधिवेशन में लिये गये निर्णयों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए अब हम सभी को कटिबद्ध होना अनिवार्य है। अधिवेशन में पारित प्रस्तावों के अनुसार वैदिक गुरुकुल परिषद् की सैद्धान्तिक परीक्षाओं का आवेदन-पत्र व पाठ्यक्रम, वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीयस्पर्धा की विवरणिका एवं विभिन्न समितियों का विवरण आपके सूचनार्थ प्रेषित किया जा रहा है।

आपसे निवेदन है कि सैद्धान्तिक परीक्षाओं के सफल संचालन हेतु गुरुकुलों के छात्र/छात्राओं की श्रेणीवार सूची 15 नवम्बर 2018 तक उपलब्ध कराने का कष्ट करें, जिससे आवेदन-पत्र एवं प्रश्न-पत्र प्रकाशित कर आप तक पहुँचाने में सुविधा हो सके। सैद्धान्तिक परीक्षायें 15 फरवरी के लगभग आयोजित की जायेंगी।

वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीयस्पर्धा छात्रों के बौद्धिक विकास के लिए अत्यन्त सहायक है। अतः आप से आग्रह है कि दिनांक 8-9 दिसम्बर 2018 को आयोजित समस्त प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेकर स्पर्धा को सफल बनायें। प्रतिस्पर्धा की प्रविष्टियाँ 30 नवम्बर 2018 तक प्रेषित करने का कष्ट करें।

सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.... **भवदीय**

प्रणवानन्द सरस्वती

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

अध्यक्ष

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

॥ ओ३म् ॥

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय : 119 गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-110049

हैदराबाद में आयोजित श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के प्रथम राष्ट्रिय अधिवेशन में लिये गये निर्णयों के अनुसार निम्नलिखित समितियों का गठन किया गया है -

१. 'श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्' पंजियन समिति -

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (अध्यक्ष), डॉ. आनन्द कुमार, डॉ. सोमदेव (मुम्बई) ।

२. वैदिक सिद्धान्त पाठ्यक्रम एवं परीक्षा नियन्त्रण समिति -

आचार्य विजयपाल, डॉ. सुकामा, डॉ. प्रियंवदा, डॉ. धारणा, डॉ. नागेन्द्र कुमार, डॉ. नन्दिता, आचार्य कोमल।

३. वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा समिति -

आचार्य डॉ. धनंजय, आचार्य मनुदेव, आचार्य ओमप्रकाश, डॉ. योगेश, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, आचार्या आदेश।

४. वैदिक गुरुकुलीय क्रीडा प्रतिस्पर्धा समिति -

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, श्री रवीन्द्र आर्य (जसात), आचार्य नन्दकिशोर, आचार्य डॉ. बिजेन्द्र, आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री।

५. गुरुकुल वैशिष्ट्य कार्यप्रणाली का अध्ययन एवं सहयोग प्रस्ताव समिति -

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या डॉ. सुमेधा, आचार्य जयकुमार।

६. केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा गुरुकुलीय पाठ्यक्रम संयोजन एवं आर्थिक सहयोग समिति -

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रो. विट्ठलराव आर्य, डॉ. आनन्द कुमार, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, आचार्या डॉ. सुमेधा, डॉ. सोमदेव (मुम्बई)।

७. श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् संचालन हेतु अर्थसंग्रह समिति -

आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार, प्रो. विट्ठलराव आर्य, आचार्य डॉ. उदयन, श्री रामपाल शास्त्री।

- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

अध्यक्ष

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

ईश्वर

जिसके गुण, कर्म स्वभाव तथा स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है, तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण वाला है, जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों के पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

- आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वामी दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय : 119 गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-110049

पाठ्यक्रम

उपाधि - वैदिकसिद्धान्तप्रवेशिका

कक्षा - प्रथमा श्रेणी (6-7-8)/प्रवेशिका श्रेणी

पाठ्यपुस्तकें - बालशिक्षा (लेखक-स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती), व्यवहारभानु (लेखक-स्वामी दयानन्द सरस्वती), पंचमहायज्ञविधि (लेखक-स्वामी दयानन्द सरस्वती), वैदिक धर्मप्रश्नोत्तरी (लेखक-पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड), संक्षिप्त जीवन चरित्र (गुरु विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द)।

उपाधि - वैदिकसिद्धान्तविशारद

कक्षा - मध्यमा श्रेणी पूर्वमध्यमा-उत्तरमध्यमा (9-10, 11-12)/प्रथमावृत्ति श्रेणी

पाठ्यपुस्तकें - संस्कारविधि (मूलपाठ), सत्यार्थप्रकाश (१ से ६ समुल्लास पर्यन्त), आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश: (लेखक-स्वामी दयानन्द सरस्वती), जीवन चरित्र (आर्यसमाज के बलिदानी, शास्त्रर्थ महारथी, उपदेशक एवं आचार्य), दो मित्रें की बातें (श्री राजेन्द्र अत्रोली, प्रकाशन-सत्यप्रकाशन, वृन्दावन रोड़, मथुरा)।

उपाधि - वैदिकसिद्धान्तभास्कर

कक्षा - शास्त्री-आचार्य स्नातक-स्नातकोत्तर (B.A- M.A)**/काशिका एवं महाभाष्यश्रेणी**

पाठ्यपुस्तकें - सत्यार्थप्रकाश (७ से १४ समुल्लास पर्यन्त), ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (वेदोत्पत्तिविषय:, वेदानां नित्यत्त्वविचार:, वेदविषयविचार:, सृष्टिविद्याविषय:), एकादशोपनिषद् (स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती/डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार), संस्कार विधि (प्रायोगिक), शास्त्रर्थ विमर्श (विषय - कर्म, सृष्टि उत्पत्ति, वेद, ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष आदि)।

- वैदिक सिद्धान्त पाठ्यक्रम एवं परीक्षानियन्त्रण समिति

ढ़ाल

ढ़ाल किसी भी सामग्री का बनाया हुआ निश्चित आकृति का वह रक्षात्मक उपकरण है जिसे योद्धा पर किये जा रहे प्रहार के सामने लाई जावे तो वह प्रहार को सहन कर योद्धा को बचा सके। भारतीय ढ़ाल मूल रूप से गोल बनाई जाती थी। भारतीय ढ़ालों को व्यास एक फीट से लेकर तीन फीट तक होता था। वैसे तो ढ़ाल लकड़ी, बाँस, कैन, धातु में ताम्र, लोहे, सोना, चाँदी तथा जानवरों की खालों में नीलगाय, बैल, हिरण, बारहसिंगा, भैंसे, कछुआ, गैंडे व ऊँट की खाल से बनाई जाती थी परन्तु ढ़ाल के लिए गैंड़े की खाल की हल्की, मजबूत व ज्यादा टिकाऊ होने के कारण आदर्श माना जाता था। कछुए व मगरमच्छ की खाल की ढ़ाल भी उसकी मजबूती के कारण काफी प्रचलित थी। ढालों को सजाने के लिए कपड़े, लाख, हाथीदाँत, हड्डी एवं मूल्यवान व अर्द्धमूल्यवान रत्नों को काम में लिया जाता था।

॥ ओ३म् ॥

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय : ११९ गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-११००४९

आवेदन-पत्र

उपाधि :- वैदिकसिद्धान्तप्रवेशिका/वैदिकसिद्धान्तविशारद/वैदिकसिद्धान्तभास्कर (चिह्नित करें)

छात्र/छात्रा नाम : ....

मातृ नाम :..

पितृ नाम :..

आचार्य/आचार्या नाम :..

आचार्य/आचार्या द्वारा सत्यापित नवीनतम छायाचित्र

जन्मतिथि (अंको में) :.................................(शब्दों में)..

वर्तमान अध्ययनरत श्रेणी :..

गुरुकुल नाम :..

स्थायी निवास :..

दूरभाष...ई.मेल..

मैंने अपनी जानकारी के अनुसार उक्त विवरण शुद्ध दिये हैं, कृपया उपरोक्त निर्धारित उपाधि के लिए मेरी प्रवृष्टि स्वीकार करें।

दिनांक -

ह. परीक्षार्थी

प्रमाणित किया जाता है कि ....छात्र/छात्रा द्वारा प्रदत्त विवरण हमारे अभिलेखों के अनुसार सत्य है, अत: नियमानुसार छात्र/छात्रा को परीक्षा देने की अनुमति प्रदान करें।

ह. आचार्य/आचार्या

(मुद्रा सहित)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय : ११९ गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-११००४९

आवेदन-पत्र

परीक्षा केन्द्र :..अनुक्रमांक..

उपाधि :..

परीक्षार्थी नाम :..

पितृ नाम :..

गुरुकुल का नाम :..

आचार्य/आचार्या द्वारा सत्यापित नवीनतम छायाचित्र

ह. प्रस्तोता

ह. आचार्य/आचार्या

(मुद्रा सहित)

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

द्वारा आयोजित एवं **मानव सेवा प्रतिष्ठान** (६० बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-२९)
द्वारा प्रायोजित

वैदिक-गुरुकुलीय-शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा

प्रतिस्पर्धा	प्रतिभागी एवं प्रतिस्पर्धा विवरण	पुरस्कार
वैदिक सिद्धान्त प्रश्नमंच	कक्षा - १ से ८ पर्यन्त के छात्र/प्रवेशिका श्रेणी सन्दर्भ ग्रन्थ-बालशिक्षा,व्यवहारभानु,पंचमहायज्ञविधि, वैदिकधर्मप्रश्नोत्तरी,जीवनचरित्र(महर्षि दयानन्द सरस्वती)	प्रथम-३०००, द्वितीय-२०००, तृतीय-१००० एवं ५ सान्त्वना पुरस्कार-५००/-
अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं लेखन	पूर्वमध्यमा उत्तरमध्यमा श्रेणी/प्रथमावृत्तिश्रेणी	अग्रिम १० उत्तीर्ण छात्रों को ५०००/- (प्रति छात्र)
धातुपाठ कण्ठपाठ एवं लेखन	पूर्वमध्यमा उत्तरमध्यमा श्रेणी/प्रथमावृत्तिश्रेणी	अग्रिम १० उत्तीर्ण छात्रों को ४०००/- (प्रति छात्र)
शास्त्रार्थ विचार (प्रस्तुति-संस्कृत/हिन्दी में) **(वाद-विवाद)**	शास्त्री एवं आचार्य श्रेणी/काशिकामहाभाष्यश्रेणी विषय- जीवनोपयोगिनीसंस्कृतभाषा समय - ७ मिनट	प्रथम-५०००/- द्वितीय-३०००/- तृतीय-२०००/-
त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ	प्रथमातः शास्त्री पर्यन्त	प्रथम-५०००/-,द्वितीय-२०००/- तृतीय-१०००/-

दिनांक : 8-9 (शनिवार, रविवार) दिसम्बर 2018

स्थान : श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली-49

नियमावली

- **वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच एवं त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से दो छात्र/छात्रायें प्रतिस्पर्धी हो सकेंगे।
- वैदिक सिद्धान्त प्रश्न मंच के लिए बालशिक्षा, व्यवहारभानु, पंचमहायज्ञविधि, वैदिक धर्मप्रश्नोत्तरी, जीवन चरित्र-महर्षि दयानन्द सरस्वती पुस्तकें निर्धारित होंगी।
- त्रिभाषी-कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के लिए श्री ओंकार जी द्वारा लिखित, रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली सोनीपत से प्राप्त 'त्रिभाषी-कोषः' पुस्तक के स्वर, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग (पृ.सं.-11 से 72 पर्यन्त) का निर्धारण किया गया है।
- वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच एवं त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा वर्तुलाकार बैठक में आयोजित की जायेगी। प्रतिस्पर्धियों के शुभनामों के अकारादि क्रम से प्रतिस्पर्धियों को स्थान दिया जायेगा।
- वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच एवं त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा का शुभारम्भ चिट निकालकर किया जायेगा।

- प्रश्न पूछने के पश्चात् प्रतिस्पर्धी द्वारा उत्तर न देने की दशा में प्रश्न अग्रिम प्रतिस्पर्धी के लिए अग्रसरित किया जायेगा।
- प्रतिभागी को केवल एक बार निरुत्तर होने पर पुनः अवसर दिया जायेगा किन्तु दूसरी बार निरुत्तर होने पर प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जायेगा। अन्तिम आठ प्रतिभागी शेष रहने पर यह सुविधा भी स्वतः समाप्त हो जायेगी। चाहें प्रतिस्पर्धी इससे पूर्व निरुत्तर न रहा हो।
- **अष्टाध्यायी, धातुपाठ (कण्ठपाठ व लेखन) प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से एक छात्र/छात्रा प्रतिस्पर्धी हो सकेंगे।
- यह प्रतिस्पर्धा परीक्षा प्रतिस्पर्धा है। जिसमें कण्ठस्थीकरण - 30 अंक, शुद्धोच्चारण - 20 अंक, प्रवाह - 20 अंक, शुद्धलेखन - 30 सहित कुल 100 अंकों की प्रतिस्पर्धा होगी।
- 75 अंकों से अधिक अंकप्राप्त प्रतिस्पर्धी को ही उत्तीर्ण स्वीकार किया जायेगा। उत्तीर्ण प्रतिस्पर्धियों को अंकों की वरीयताक्रम से अग्रिम दश प्रतिभागियों को समान पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।
- **शास्त्रार्थ विचार (वाद-विवाद) प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से पक्ष-विपक्ष अर्थात् एक जोड़ी ही प्रतिस्पर्धी होगी।
- विषय प्रस्तुति के लिए 5 से 7 मिनट निर्धारित किये गये हैं। 5 मिनट की समाप्ति पर प्रथम अर्धसंकेत किया जायेगा तथा 7 मिनट की समाप्ति पर पूर्णसंकेत किया जायेगा। विषय-प्रस्तुति में न्यून या अधिक समय होने पर अंक काटे जायेंगे।
- पक्ष एवं विपक्ष के जोड़े का निर्धारण चिट निकालकर किया जायेगा।
- प्रथम पक्ष द्वारा विषय-प्रस्तुति के पश्चात् प्रतिपक्षी को प्रस्तुत विषय से ही पाँच प्रश्न पूछने होंगे, जिनका उत्तर प्रथम पक्ष को देना होगा। ऐसे ही द्वितीय पक्ष द्वारा विषय-प्रस्तुति के पश्चात् प्रथम पक्ष को प्रस्तुत विषय से पाँच प्रश्न पूछने होंगे, जिनका उत्तर द्वितीय पक्ष को देना होगा। प्रति प्रश्न एवं उत्तर के लिए प्रतिस्पर्धियों को अधिकतम 60 सेकण्ड का समय दिया जायेगा।
- शास्त्रार्थ विचार (वाद-विवाद) प्रतिस्पर्धा में विषयप्रस्तुति-20, शुद्धोच्चारण-10, भावभंगिमा एवं प्रवाह-10, प्रश्न-5, उत्तर-5 अंक सहित कुल 50 अंक होंगे।
- शास्त्रार्थ विचार (वाद-विवाद) प्रतिस्पर्धा के पुरस्कार गुरुकुल की जोड़ी के अनुसार दिये जायेंगे।
- **निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य एवं स्वीकार्य होगा।**
- **सभी प्रतिस्पर्धियों को द्वितीय शयनयान श्रेणी/सामान्य बस का किराया दिया जायेगा।** प्रतिस्पर्धियों के साथ आने वाले मार्गदर्शकों अथवा सहयोगियों को यात्रा-व्यय स्वयं वहन करना होगा। यात्रा टिकट साथ अवश्य लायें। आपके आवास-निवास एवं भोजन का समुचित प्रबन्ध कार्यक्रमस्थल की ओर से रहेगा।

- निवेदक
प्रतिस्पर्धा आयोजन समिति

प्रजा का कार्य ही शासक का कार्य है, प्रजा का सुख ही उसका सुख है, प्रजा का प्रिय ही उसका प्रिय है तथा प्रजा के हित में ही उसका हित है। उसका सर्वस्व प्रजा के निमित्त है, अपने लिए कुछ भी नहीं है।

ओ३म्

पावका नः सरस्वती

॥ निमन्त्रण पत्र ॥

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (न्यास)

११९ गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-४९

का

८५ वाँ वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह
तथा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ

3 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2018 तक

आयोजित किया जा रहा है, इस शुभ अवसर पर

आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

सम्पर्क सूत्रः 09868855155, 09810420373
www.pranwanand.org, info@pranwanand.org, smdnyas99@gmail.com

संसद-भवन भ्रमण

पंजीयन संख्या : UTTBIL/2008/23546 डाक पंजीयन नं. : UA/DO/DDN/397/2016-2018

पतंजलि®

प्रकृति का आशीर्वाद

करोड़ों देशवासियों का
भरोसेमन्द हर्बल टूथपेस्ट

दन्त कान्ति

दन्त कान्ति के लाभ

✓ लौंग, बबूल, नीम, अकरकरा, तोमर, बकुल आदि बेशकीमती जड़ी बूटियों से निर्मित दन्त कान्ति, ताकि आपके दाँतों को मिले लंबी उम्र व असरदार प्राकृतिक सुरक्षा।

✓ पायरिया, मसूड़ों की सूजन, दर्द व खून आना, सेंसिटिविटी, दुर्गन्ध एवं दाँतों के पीलेपन आदि को दूर करे।

✓ कीटाणुओं से लम्बे समय तक बचाकर दे दाँतों को प्राकृतिक सुरक्षा कवच।

पूरी दुनिया अब नैचुरल प्रोडक्ट्स को अपना रही है
आप भी पतंजलि के नैचुरल प्रोडक्ट्स अपनाइए और प्रकृति का आशीर्वाद पाइए

आवाहन– राष्ट्र के जागरुक व्यापारियों व ग्राहकों से हम विनम्र आवाहन करते हैं कि करोड़ों देश भक्त भारतीयों की तरह, आप भी पतंजलि के उत्पादों को अपनी दुकानों व दिलों में सर्वोच्च प्राथमिकता देकर जन–जन तक पहुँचाएं और देश की सेवा व समृद्धि में योगदान दें। जिससे महात्मा गाँधी, भगत सिंह व राम प्रसाद बिस्मिल आदि सभी महापुरुषों के स्वदेशी अपनाने के सपने को मिलकर साकार कर सकें।

पतंजलि आयुर्वेद के लगभग 500 उत्पाद हैं, ये शुद्ध खाद्य उत्पाद व हर्बल सौन्दर्य उत्पाद हमारे पतंजलि स्टोर्स के साथ ओपन मार्केट की दुकानों पर भी उपलब्ध हैं।

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी : आचार्य धनञ्जय द्वारा श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित एवं जयरति प्रिन्टिंग प्रेस, ३५ कांवली रोड, देहरादून से मुद्रित।
मुद्रण तिथि - ३ नवम्बर २०१८ :: डाक प्रेषण तिथि - ८ नवम्बर २०१८